(2) Participatory Approache (सहभागिता उपागम) →

शब्द सहभागिता का अर्थ है किसी क्रिया, गतिविधि अथवा परियोजना (Project) में सक्रिय रूप से शामिल होकर अपना योगदान करना। जब इसे शिक्षण अधिगम में प्रयुक्त किया जाता है तब इसका अर्थ होता है - शिक्षक द्वारा शिक्षण में गतिविधियों को शामिल करना जिससे कि कक्षा का प्रत्येक छात्र उस गतिविधि में शामिल होकर स्वयं क्रिया करके अनुभव द्वारा सीख सकें।

→: सहभागिता उपागम की जड़ें व्यवहारवाद व संरचनावादी मनोविज्ञान से जुड़ी हैं। सहभागिता उपागम को परावर्तित चिन्तन (Reflective teaching/Thinking Approach) अथवा अन्तःक्रियात्मक (Interactive teaching approache) उपागम भी कहा जाता है।

→: सहभागिता उपागम में यह आशा की जाती है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विविध प्रकार की गतिविधियां/परियोजनाएँ शामिल की जायेंगी, और शिक्षक द्वारा सभी छात्रों की इन गतिविधियों में सहभागिता सुनिश्चित की जायेगी; इस प्रकार छात्र अपने द्वारा स्वयं अपने मस्तिष्क में ज्ञान का निर्माण करेंगे (रचनावाद)

लाभ →: उसमें प्रत्येक छात्र की विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता सुनिश्चित की जाती है जिससे प्रत्येक छात्र को स्वयं कार्य करने, दूसरे छात्रों से मिलजुलकर कार्य करने व अनुभव द्वारा सीखने का अवसर प्राप्त होता है। यह विधि परम्परागत विधियों के जिनमें की छात्र एक निष्क्रिय श्रोता होता है के विरुद्ध छात्रों को सक्रिय रखती है, व शिक्षण में रुचि

Scanned with CamScanner

बनाये रखती है।

सहभागिता उपागम के अन्तर्गत की जाने वाली गतिविधियाँ :-
सहभागिता उपागम में अध्यापकों द्वारा निम्न गतिविधियों का सुझाव दिया जाता है -

(1) मस्तिष्क उद्वेलन (Brain Storming) - समस्याओं के समाधान प्राप्त करने हेतु छात्रों के मस्तिष्क में आये विचारों का प्रयोग करना। इसमें अध्यापक छात्रों को अधिक से अधिक विचार प्रस्तुत करने के अवसर प्रदान करता है।

(2) कार्यशाला - किसी विषय विशेष पर कार्यशाला का आयोजन कराना, जिसमें विषय विशेषज्ञ की देखरेख में छात्र स्वयं कार्य करते हैं तथा प्रत्यक्ष हस्त अनुभव प्राप्त करते हैं। (जैसे पाठ योजना निर्माण पर कार्यशाला)

(3) भूमिका निर्वहन - विभिन्न घटनाओं / मुद्दों / परिस्थितियों पर आधारित नाटक (Play) में छात्रों को विभिन्न भूमिकाएं प्रदान करना। (उदाहरण के लिए - वनों का नाश व पर्यावरण विषय पर छात्रों द्वारा भूमिका निर्वहन)

इनके अतिरिक्त - दत्त कार्य (Assignment), सामुदायिक सर्वे (किसी क्षेत्र विशेष में जागरूकता अभियान), विशेषज्ञों से साक्षात्कार कराना, लोकगीत लिखना, पाककला, पेंटिंग्स बनाना, फिल्म/पोस्टर निर्माण, कहानी बनाना, समस्या समाधान परियोजनाएं (Projects), कठपुतली आदि के कार्यक्रम।

प्रयोग (क्षेत्र Sope) - सहभागिता विधि रचनावाद के आधुनिकतम सिद्धान्तों पर आधारित है, यह सभी विद्यालयी विषयों में सरलतापूर्वक प्रयोग की जा सकती है।

Scanned with CamScanner

(3) Collaborative Learning (सहयोगात्मक अधिगम)

यह अनुदेशन की वह विधि है जिसमें छात्रों को छोटे छोटे समूहों में बाँटकर कार्य करने पर बल दिया जाता है अथवा किसी समान लक्ष्य को प्राप्त किया जाता है।

लाभ- → इसके द्वारा उच्च संज्ञानात्मक चिंतन कौशलों (विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन, समस्यासमाधान, सृजनात्मकता) आदि का विकास होता है।

→ यह छात्रों की शिक्षकों से अधिक अन्तःक्रिया पर बल देती है।

→ छात्रों की धारणशक्ति (Retention) बढ़ती है।

→ छात्रों में आत्मसम्मान की भावना (Self esteem) विकसित होती है।

→ छात्रों को स्वयं अधिगम अनुभवों से संतुष्टि प्राप्त होती है (क्योंकि स्वयं मिलजुलकर कार्य करते हैं)

→ इसके द्वारा छात्रों में अनेक सामाजिक गुणों का विकास (जैसे - सहयोग, नेतृत्व क्षमता, व प्रेम, आदि) होता है।

→ छात्रों की विषय के प्रति धनात्मक ~~अभिवृत्ति~~ अभिवृत्ति (Positive attitude) विकसित होती है।

→ इससे छात्रों में सम्प्रेषण कौशलों/क्षमता का विकास होता है।

→ इससे एक ऐसे वातावरण का निर्माण होता है जिसमें छात्र अभिप्रेरित, व सक्रिय ~~व~~ होते हैं तथा खोजबीन करके अधिगम करते हैं।

Scanned with CamScanner

→ सहभागी अधिगम / सहयोगात्मक अधिगम को प्रभावशाली बनाने हेतु उपाय –

(1) समूहों के लक्ष्य / उद्देश्य निर्धारित करना

(2) समूहों का आकार संतुलित रखना (न ज्यादा छोटा न ज्यादा बड़ा, 4–6 छात्र)

(3) समूहों के नियम लचीले (flexible) रखना

(4) बड़े कार्यों के लिए, समूहों की भूमिका पहले ही निर्धारित करना।

(5) पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षणों का निर्माण (ताकि समूहों का कार्य पूर्व व पश्च मूल्यांकन हो सके, इसके लिए लिखित या मौखिक परीक्षण बनाना)

→ सहभागी अधिगम हेतु अनुदेशनात्मक रणनीति –

(1) सोचो – जोड़े बनाओ – साझा करो (Think-Pair-Share) →
– शिक्षक प्रश्न पूछता है, विद्यार्थी उत्तर लिखते हैं और सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं और इस प्रकार उन्हें एक दूसरे के विचार जानने व अन्तःक्रिया के अवसर प्राप्त होते हैं।

(2) जिग्सा (पहेली) विधि → छात्र समूहों में पाठ्य सामग्री पर मिलजुलकर जिग्सा बनाते हैं व एक दूसरे से हल कराते हैं।

(3) अधिगम स्टेशन (Learning Station) → छात्रों को कोई 4 समूहों में बाँटकर बैठा दिया जाता है, शिक्षक द्वारा दिये प्रकरणों पर क्रमशः सभी समूहों को प्रस्तुतीकरण करना होता है।

(4) समस्या समाधान – विद्यार्थियों को समूहों में प्रश्न / समस्या प्रदान करना, जिसका वे अलग 4 समूहों में समाधान प्रस्तुत करते हैं।

दोष / प्रयोग – इस विधि को सभी विद्यालयी विषयों में प्रयोग किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner